Module - 3

Equilibrium level of income, employment in two Sector Economy

चूंकि कीन्स का सिद्धान्त अल्पकाल के लिए है जिसमें कि पूंजी की मात्रा, श्रमिकों की कार्यकुशलता, उत्पादन तकनीक आदि स्थिर रहती है। ऐसी हालत में रोजगार की मात्रा तथा आय का स्तर एक साथ घटते-बढ़ते रहते हैं तथा इनको निर्धारित करने वाले तत्व भी एक ही हैं। अर्थात दोनों ही कुल या समग्र मांग द्वारा निर्धारित होते हैं। अतः रोजगार एवं आय के निर्धारण में हम द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था का अध्ययन करेंगे।

द्वि-क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में दो ही क्षेत्र होते हैं — परिवार और व्यावसायिक इकाइयाँ जिसमें सार्वजनिक व्यय तथा करारोपण का अभाव होता है ऐसी अर्थव्यवस्था में आय के साम्य स्तर का वर्णन दो विचारधाराओं के आधार पर किया जाता है।

① कुल मांग और कुल पूर्ति की समानता

② बचत और विनियोग की समानता

① द्वि क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय का साम्य स्तर के लिए हम कुल मांग एवं कुल पूर्ति का अध्ययन करेंगे।

कुल मांग से तात्पर्य अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं की कुल मांग से है। कुल मांग के दो भाग हैं — एक तो उपभोक्ता वस्तुओं के लिए मांग कहते हैं। दूसरा प्रकार की मांग है पूंजी वस्तु की मांग। पहले को उपभोग मांग एवं दूसरे को विनियोग मांग कहते हैं। अतः कुल मांग से हमारा अभिप्राय है कि लोग तथा सरकार उपभोग तथा विनियोग पर कुल कितना व्यय करना चाहते हैं। अतः

कुल मांग = उपभोग मांग + विनियोग मांग।

जहाँ तक उपभोग मांग का प्रश्न है यह उपभोग की प्रवृत्ति तथा आय पर निर्भर करती है। यदि उपभोग प्रवृत्ति दी हुई हो तो जैसे-जैसे आय बढ़ेगी, वैसे वैसे उपभोग की मांग भी बढ़ेगी। कीन्स चित्र से इसे स्पष्ट किया जा सकता है। कुल मांग का दूसरा भाग विनियोग है कीन्स ने यह पूर्व धारणा की थी कि विनियोग मांग आय बढ़ने के साथ नहीं बढ़ती है, चित्र में I रेखा स्वायत्त विनियोग रेखा दर्शाता है अर्थात आय की मात्रा कुछ भी हो विनियोग की मात्रा समान रहती है। यदि हम इसे विनियोग मांग को उपभोग मांग C के ऊपर जोड़ दें तो हमें कुल मांग वक्र C+I प्राप्त होगा जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है अतः आय निर्धारण

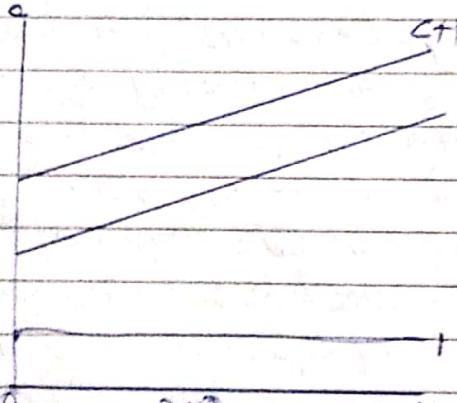

विश्लेषण में C+I वक्र ही कुल माँग को बताता है

कुल पूर्ति — अर्थव्यवस्था में उपभोग और विनियोग के लिए वस्तुओं और सेवाओं की कुल उपलब्ध मात्रा को कुल पूर्ति कहते हैं। अर्थव्यवस्था में उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को राष्ट्रीय उत्पादन कहते हैं इसे एक चित्र के द्वारा दर्शाया जा सकता है। इस चित्र में कुल पूर्ति को 45° रेखा की सहायता से प्रदर्शित किया गया है। 45° रेखा दो बातों को दर्शाती है — अर्थव्यवस्था में वस्तुओं की कुल आपूर्ति और (ii) मुद्रा के रूप में कुल आय। चित्र में यह भी बताया गया है कि 45° रेखा उत्पादित आय X axis पर है, समाज इसे प्रकार से वितरित करती है उसका एक भाग (C) उपभोग किया जाता है और एक भाग बचा लिया जाता है जिसे S से दर्शाते हैं। अतः 45° रेखा Y=C+S को भी प्रतिनिधित्व करती है। उदाहरण के लिए यदि Y = 2000 करोड़ है तो C+S भी 2000 करोड़ के बराबर होगी।

अब प्रश्न यह उठता है कि राष्ट्रीय आय का साम्य स्तर कहाँ निर्धारित होता है। इसका उत्तर यह है कि राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर उस बिन्दु पर निर्धारित होगा जिस स्तर में कुल माँग एवं कुल पूर्ति एक दूसरे के बराबर होता है अर्थात जहाँ C+I रेखा C+S रेखा को काटती है इसे चित्र के द्वारा भी बताया जा सकता है। OX अक्ष पर राष्ट्रीय आय और OY axis पर उपभोग व्यय और विनियोग को दिखाया गया है। C+I वक्र उपभोग C एवं विनियोग का संयुक्त वक्र है जिसे कुल माँग रेखा कहते हैं। कुल पूर्ति वक्र को Y=C+S या 45° रेखा के द्वारा व्यक्त किया जाता है। कुल माँग वक्र C+I कुल आपूर्ति वक्र की रेखा को E बिन्दु पर काटता है अतः आय का स्तर संतुलन OY है। इससे स्पष्ट है कि आय का संतुलन स्तर OY है OY के अलावा अन्य आय स्तर पर कुल माँग और कुल पूर्ति बराबर नहीं होते हैं।

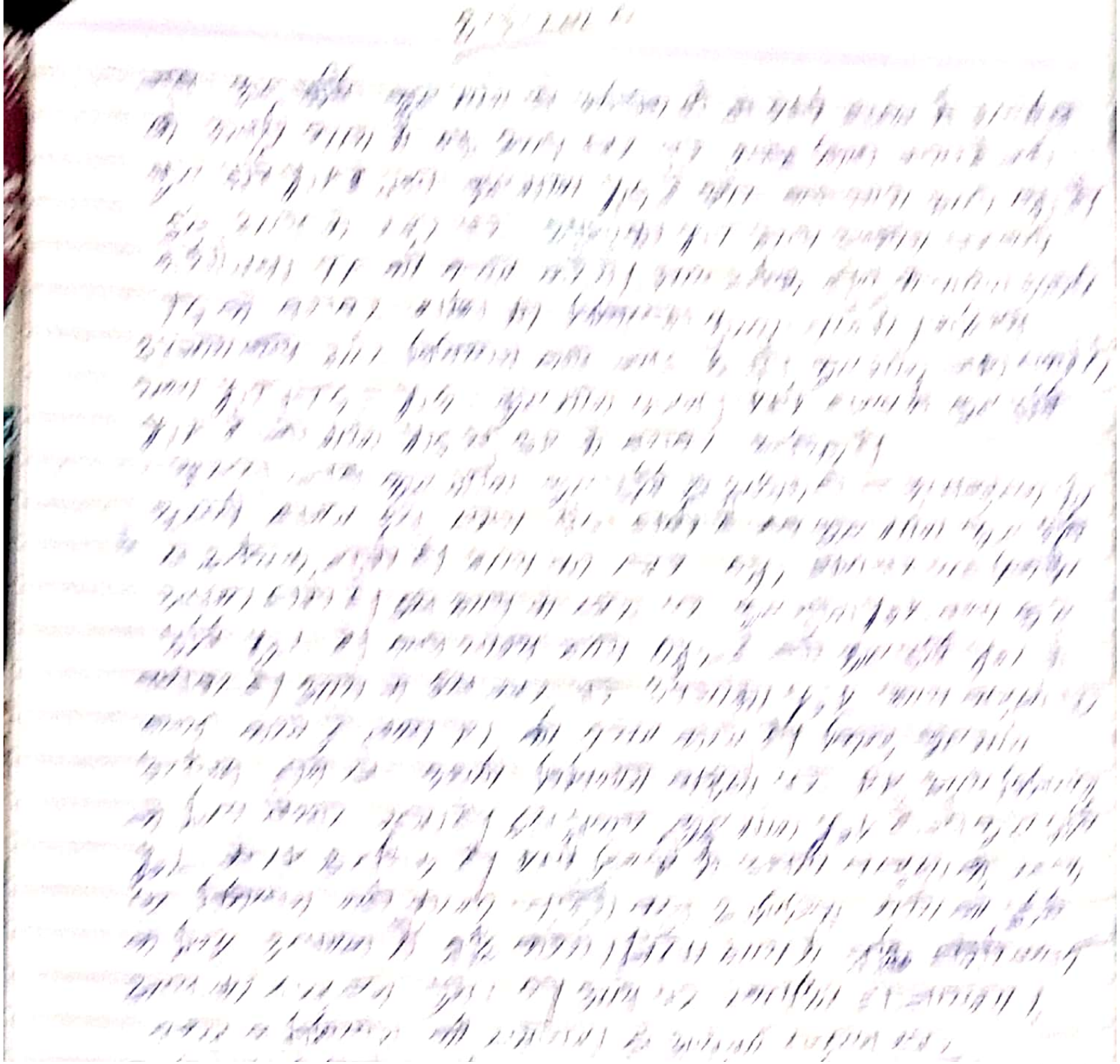

Scanned with CamScanner